Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

शोध आलेख

उत्तर–आधुनिकतावादी विमर्श : राजनीतिक–साहित्यिक दृष्टि से विवेचन : राजनीतिक–साहित्यिक चिंतन

डॉ. नवीन तिवारी[1]
डॉ. गोपीराम शर्मा[2]

19वीं सदी ने 'आधुनिकता' का प्रत्यय देकर विश्व को आगे बढ़ाया। इसी प्रकार 20वीं सदी 'उत्तर–आधुनिकता' के प्रत्यय के साथ सामने आयी। उत्तर–आधुनिकता में आधुनिकता के बहुत से मूल्यों, सिद्धांतों व मान्यताओं के प्रति अविश्वास है। आधुनिकता समग्रता को महत्त्व देती रही, एक केन्द्रवादी विचारधारा बनकर सामने आयी। उत्तर–आधुनिकता ने उस समग्रता, एकसूत्रता को झूठा बतलाते हुए कहा कि यहाँ बहुत से लिटिल नैरेटिव अर्थात उपकेन्द्र मौजूद हैं। उत्तर–आधुनिकता इन उपकेन्द्रों की सुध लेती है, जो हाशिए में पड़े थे और उनके प्रतिनिधित्व के लिए यह आगे आती है।

जिस प्रकार से आधुनिकता को, उसके प्रभावों को राजनैतिक–सामाजिक व साहित्यिक क्षेत्रों में देखा–परखा गया तथा एक शताब्दी से अधिक पूरा विश्व आधुनिकता से प्रभावित रहा। उत्तर–आधुनिकता भी ऐसा प्रत्यय है, जिस पर नई बहस होने लगी है।

भारत जैसे देश में पहले यूरोप से उपजे आधुनिकतावाद ने हमला किया। जबकि आधुनिकता की वैसी जरूरत और पृष्ठभूमि यहाँ थी ही नहीं, जैसी यूरोप के देशों की रही। उल्टे आधुनिकतावाद अपनाने के चक्कर में हम अपने दर्शन, धर्म और मान्यताओं पर प्रहार कर बैठे। अब उत्तर–आधुनिकतावाद आया है और हर सैद्धांतिकी को अमान्य या समस्याग्रस्त बताना ही जिसकी देन है, को यहाँ थोपने लगा है।

'उत्तर' शब्द सबसे पहले स्थापत्य कला से जुड़ा। यहाँ उत्तर–आधुनिकता का प्रयोग लासवेगास शहर की नगरीय संरचना में आये बदलावों के लिए किया गया था। सन् 1870 में अंग्रेजी सलून पेंटर जॉन वेटकिन्स चौयमैन ने फ्रांस की प्रभाववादी कला को कम महत्त्व देते हुए प्रचलित नयी व उन्नत कला को उत्तर प्रभाववादी कला कहकर पुकारा।

उत्तर–आधुनिकता शब्द का सामाजिक स्थितियों के लिए सबसे पहले सन् 1947 में अर्नाल्ड टायनबी ने इस्तेमाल किया। उन्होंने आधुनिकता के अन्त को उत्तर–आधुनिक अवस्था माना। इनकी पुस्तक 'ए स्टडी ऑफ हिस्ट्री' में 'उत्तर–आधुनिक' शब्द की ऐतिहासिक सन्दर्भों में व्याख्या मिलती है। इसमें आया है कि सन् 1875 में आधुनिक युग समाप्त होता है और औद्योगिकीकरण से प्रभावित नई सामाजिक अवस्था का दौर शुरू होता है। 1918 से 1939 के बीच युद्धकालीन समय को उत्तर–आधुनिक' माना गया।

टायनबी ने माना– ''आधुनिकता के बाद उत्तर–आधुनिकता तब शुरू होती है, जब लोग कई अर्थों में अपने जीवन, विचार, भावनाओं व अपोलोनियन तार्किकता व संगति को त्याग कर डायनोसियन अतार्किकता व अंसगति को अपना लेते हैं।''[1]

उत्तर–आधुनिकता स्वयं भी परिभाषा, समग्रता व किसी एक सिद्धांत के विरुद्ध अवधारणा है। वह बहुलतावादी है, समग्रता को अस्वीकार करती है और विविध लक्षणों के समूह से युक्त है। अतः उसकी कोई समग्र परिभाषा बनाना मुश्किल है। गोपीचंद नारंग के अनुसार– "उत्तर–आधुनिकता बहुलतावाद का दर्शन है, जो केन्द्रवर्तिता अथवा सर्वसत्तावाद, सांस्कृतिक वैविध्य, क्षेत्रीय अस्मिता तथा अर्थ के अन्यत्व की विवृति पर और उस विवृति में पाठक की भागेदारी पर आग्रह करता है।"[2]

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

तारकनाथ बाली के अनुसार– ''मैं उत्तर–आधुनिकता को मूलतः आधुनिकता के गंभीर पुनरीक्षण के रूप में देखता हूँ जिसमें मानव को केन्द्र में रखकर द्रुतगति से बढ़ती आधुनिकता को नए यंत्र, टेक्नोलॉजी, जन विचार के दृश्य–श्रव्य माध्यमों का तेजी से विकास, विस्तार आदि के प्रभावों पर विचार किया गया है।"[3]

कृष्णदत्त पालीवाल के शब्दों में– ''उत्तर–आधुनिकता शब्द कई भिन्न अर्थ संदर्भों में प्रयुक्त होने वाला शब्द है, जिसमें वर्तमान की पूरी मनोदशा, माहौल, विभ्रम, परिदृश्य समाहित है जिसमें विचार का 'केन्द्रवाद' ध्वस्त हो गया है और विकेन्द्रीयता की प्रवृत्ति उभर रही है।"[4]

सुधीश पचौरी उत्तर–आधुनिकता को एक अच्छा विमर्श बताते हुए कहते हैं– "उत्तर–आधुनिकता की सबसे बड़ी विशेषता यह भी है कि वह पश्चिमी वर्चस्ववाद को चुनौती देती है। वह इसके लिए पश्चिमी तर्कशास्त्र को चुनौती देती है, वह तर्कशास्त्र जो श्अस्मिताश के लिए भेद और 'भिन्नता' को दबाती है। इस तरह यह एक नैतिक विमर्श है।"[5]

स्पष्ट है कि उत्तर–आधुनिकता कोई स्थिर वाद के रूप में नहीं है। यह सिद्धांत समग्रता को नहीं मानता, परिभाषाओं में बंधना नहीं चाहता, स्थिर होकर सामने नहीं आना चाहता और किसी सैद्धांतिकी को नहीं स्वीकारता। कहा गया है– ''यह एक ऐसा वाद है जो एक स्थिति या दशा की तरह है जो लगातार अस्थिर है चंचल है, विखंडनशील है।"[6]

उत्तर–आधुनिकता को उसके लक्षणों व चिह्नों से समझा जा सकता है। उत्तर–आधुनिकता महानता, पवित्रता, शुचिता जैसे शब्दों और सिद्धांतों में विश्वास नहीं करती। ल्योतार ने बहुत पहले ही यह कह दिया था कि आधुनिकतावादी महावृत्तांत, महान विचार, महानायक सब बीत चुके हैं।

सुधीश पचौरी कहते है कि उत्तर आधुनिकता में महान विशेषण नहीं हैं– ''महान संभावनाएँ उत्तर–आधुनिकता में संभव ही नहीं हैं।''[7]

उत्तर–आधुनिकता ज्ञान की वैधता पर प्रश्नचिह्न लगाती है। समाजशास्त्री बौद्रीआ पूंजीवाद को नयी छलना के प्रत्यय से समझाते हुए कहते है कि अब पूंजीवाद 'वृद्ध पूंजीवाद' में बदल गया है। यह पूंजीवाद अतिविकसित है और इसका प्रभाव केवल उत्पादित वस्तु तक ही नहीं हैं, बल्कि यह सामाजिक छवि, प्रतीक व सम्बन्धों को भी प्रभावित करने लगा है। उत्पादन या वस्तुएं अब चिह्नों या मॉडल के अनुसार खरीदी–बेची जाती है। यह चिह्न व्यवस्था ही छलना है। यह पूंजीवाद छलनामय है। इसे ही उत्तर–आधुनिकता का एक लक्षण माना गया है।

उत्तर–आधुनिकता में विकेन्द्रीयता, विभिन्नता, कर्तृता के अंत, महाख्यानों का अंत, महानता का अंत, मानव का अंत, रुपये का अंत, इतिहास का अंत जैसे लक्षण शामिल है। आलोचक–लेखक की मृत्यु, कला का अंत, विचारधाराओं का अंत जैसे अंतवाद इसमें व्याप्त हैं। इसीलिए यह प्रश्न यह उठता है? क्या उत्तर–आधुनिकतावाद विश्व के लिए एक सही विचार है? ल्योतार ने जब उत्तर–आधुनिकतावादी आदोलन की घोषणा की, तो वे हेगेल व मार्क्स को निशाना बनाना चाहते थे इस आवेश में उन्होंने ज्ञानोदय, समग्रता के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया पर उन्होंने यह चिंता कतई नहीं की, कि विवेक और स्वतंत्रता का अंत करके वे मुक्ति आन्दोलनों की बाधा हो जाएंगे।

मैनेजर पांडेय ने इसी ओर इंगित करते हुए लिखा– ''आलोचनात्मक चेतना के विरुद्ध उत्तर–आधुनिकतावाद का अभियान मुक्ति के प्रत्येक संघर्ष और आन्दोलन के विरुद्ध है। वास्तव में मुक्ति

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

की भावना के लिए वह विवेक जरूरी है जो न्याय, स्वतंत्रता और मानवीय सुख की संभावनाओं की खोज करे। विवेक और चेतना की मौत की उत्तर–आधुनिकतावादी घोषणा के बाद संभावना कहाँ होगी।"[8]

उत्तर–आधुनिकता ज्ञान, विवेक, भाषा, इतिहास आदि को किसी प्रकार की सत्ता या शक्ति के अधीन होकर चलने से मनाही करने लगी थी पर उसने मनुष्य को ही ज्ञान, विवेक, चेतना से मुक्त कर डाला। चार्ल्स अल्टिएरी ने अपने लेख में दावा किया कि उत्तर–आधुनिकता की सैद्धांतिक चिंतन शक्ति मर चुकी है।

इसी प्रकार प्रो. एलन सोकल ने उत्तर–आधुनिकतावादियों पर प्रहार करते हुए कहा कि उनकी भाषा जार्गन से भरी है अर्थात् उनके दावे अनर्गल बातों से युक्त है।

21वीं सदी में उतर–आधुनिकता ने राजनीति, साहित्य, समाज, मीडिया, सिनेमा आदि सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया। भूमंडलीकरण और बाजारवाद में पूरे विश्व को एक ग्राम में तब्दील कर दिया। पूंजीवाद के इस नए रूप, जिसे नव्यपूंजीवाद कहा गया, ने सभी मूल्यों, रिश्तों और संबंधों को पण्य बनाकर रख दिया। 'हर चीज की कीमत है और हर चीज बिकाऊ है' के नारे के साथ आए भूमंडलीकरण और बाजारवाद ने कहा– 'जो बिक नहीं सकता वह चल नहीं सकता।'

यही समकालीन कवि कह रहा है कि बाजार में देखते ही देखते व्यक्ति भी बिकने वाली सामग्री में बदल रहा है–

"देखने के लिए नजर चाहिए
ठीक हो दूर और पास की तो क्या कहना
बाजार को दूर से देखने पर भी लगता है डर
मेरा घर तो बाजार के इतने पास है...
कई बार ऐसा हुआ कि नहाने के लिए पानी लेने गया
और साबुन के भाव बिकते–बिकते बचा
यह तभी हुआ कि मैंने अपनी कीमत नहीं लगाई
खुद को बिकने से बचाए रखना रोज का हादसा।"[9]

बाजार की अपनी शक्ति है, अपनी धारा है और अपने अस्त्र हैं। बाजार से टकराने का शक्ति–साहस कविता या कवि ही कर सकता है, जो कबीराना फक्कड़पने से बाजार को चुनौती देता आया है। समकालीन कवि अपनी कविता में भूमंडलीकरण बाजारवाद और उत्तर आधुनिकता के प्रभावों को उद्घाटित करने में लगा है। वैश्वीकरण के इस युग में मनुष्य भी मशीन का एक पुर्जा मात्र बनकर रह गया है। महँगाई के इस दौर में सबसे सस्ता मनुष्य ही है। कवि एकांत श्रीवास्तव कहते हैं–

"चढ़ गई हैं कीमतें चीजों की आकाश में
गिर गया है आदमी का बाजार–भाव।"

समकालीन हिन्दी कविता की यात्रा में क्षोभ, असंतोष, पीड़ा, निराशा, अनास्था, अविश्वास, संकीर्णता, स्वार्थ, हिंसा, कुण्ठा के बावजूद सृजन के प्रति निष्ठा और ईमानदारी का आस्था प्रधान स्वर पूरी शक्ति के साथ सुनाई देता है। एकांत श्रीवास्तव भविष्य की आशा संजोते हुए कहते हैं–

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

"सिक्कों का मूल्य यहाँ सब जानते हैं
मनुष्य का मूल्य कोई नहीं जानता।"

पूँजीवाद, उपनिवेशवाद के द्वारा यूरोप ने पूरे विश्व को छला और लूटा। जिनके पूर्वजों ने एशिया, अफ्रीका के देशों को गुलाम बनाया, शोषण किया। उनके वंशज कह रहे है कि इतिहास तो कुछ हैं ही नहीं, उसका तो अंत हो चुका है। यही लोग भूमंडलीकरण, बाजारवाद के साथ अब फिर इन्हीं देशों में हैं। यह पूंजीवाद का विस्तार है, जिसमें बाजार हमारी पसंद–नापसंद के आधार पर संचालित नहीं होता, बल्कि बाजार हमारे पसंद–नापसंद को तय करना शुरू करता है–

"आजादी की गोल्डन जुबली साल में
आजादी का मतलब
बाजार में अपने पसंद–नापसंद की
चीज चुनने की आजादी
और आपकी पसंद
वे तय करे हैं
जिनके पास उपकरणों का कायाबल
विज्ञापनों का मायाबल
आपकी आजादी पसंद है उन्हें
चीजों का गुलाम बनने की आजादी
यांत्रिक सभ्यता के शीर्ष पर
उन्होंने सिर्फ कम्प्यूटर ही नहीं बनाए हैं
आपके दिमाग को भी कम्प्यूटर में बदल दिया है
जिसका सॉफ्टवेयर वे सप्लाई करते हैं
घर बैठे होम डिलिवरी
मुफ्त बिलकुल मुफ्त।"[10]

वैश्विक कंपनियां छलनानमय विज्ञापनों द्वारा जिनमें स्त्री मॉडलों की मोहक मुस्कान से ग्राहक को लूटने की साजिश रहती है, द्वारा मानव को संगठित पूँजीवाद की जीवनशैली, खान–पान तथा राग–रंग में रंगती जा रही है। कल्पना लोक में विज्ञापनी दुनिया का कब्जा है। कृत्रिम जरूरतों की ओर विज्ञापन का आमंत्रण द्रष्टव्य है–

"जेब में रखिए धन
फास्ट फूड ही खाइए
'कोकश पीजिए दनादन
मॉडलों के संग–संग
चलने का बनाइए मन
बाजार की मेहरबानी है दोस्तों
बन जाइए नंबर वन।"[11]

बाजार का प्रवेश हमारे मन, प्राण, आत्मा और मानसिकता तक ही नहीं बल्कि वह हमारे सपनों तक में प्रवेश पा चुका है–

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

"जितना ज्यादा बाजार
बाजार में है
उससे कहीं ज्यादा
बाजार
स्वप्न में है।"[12]

यूरोप के इस दर्शन को प्रारम्भ में अमेरिका नहीं स्वीकारता था, अब वही इसका बड़ा प्रचारक है। जो भारत जैसे देशों को थिंक ग्लोबली, एक्ट लोकली का ज्ञान देता है और स्वयं थिंक लोकली, एक्ट ग्लोबली के सिद्धांत पर चलता है। वह अपनी चीजों हेतु बाजार बनाये रखना चाहता है। अमेरिका अपने लूटतंत्र का प्रचार करने के लिए उत्तर–आधुनिकता जैसे नारे को आगे बढ़ा रहा है। कवि जयप्रकाश लीलवान पूँजीवाद को पाशविक करार देते हैं। मशीनों के आने से श्रम और सृजन की महत्ता घटी है, इससे निष्पन्न बेगारी, लाचारी को अपनी कविता में अभिव्यक्त करते हैं–

"पूँजीवादी पाशविकता की पाठशाला में
पढ़कर आए ये भेड़िए
अब पूरे भूमण्डल पर
अपनी वीभत्स कामुकता का प्रदर्शन
करने निकल चले हैं
तकनीक उनकी रखैल है
और विज्ञान के उपकरण
इस रखैल के
अलंकार–शृंगार बना दिए गए हैं।"[13]

पूँजीवादी औद्योगिकता और तथाकथित आधुनिकता के नाम पर विसंस्कृतीकरण के फलस्वरूप समाजगत संबंधों में भी परिवर्तन आया है। संस्कृति का सृजनात्मक पक्ष क्षरित होता जा रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों तथा उदारीकृत पूँजीवादी व्यवस्था ने प्रभुता संपन्न देशों की अपसंस्कृति को दुनिया के कोने–कोने तक पहुँचाने का काम किया है।

कवि अष्टभुजा शुक्ल कविताओं के बहाने इस अपसंस्कृति की ओर से आती दुर्गंध की ओर इशारा करते हैं–

"एक हाथ में पेप्सी कोला
दूजे में कंडोम
तीजे में रामपुरिया चाकू
चौथे में हरिओम
कितना ललित ललाम यार है
भारत घोड़े पर सवार है।
एड्स और समलैंगिकता की
रहे सलामत जोड़ी
विश्वग्राम की समता में
हमने सीमाएँ तोड़ीं
दुनिया पर एकाधिकार है

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

भारत घोड़े पर सवार है।''[14]

आयातित संस्कृति हमारी उदात्त संस्कृति को दीमक की तरह चाटती जा रही है। अमेरिका सहित चीन, रूस की भौंड़ी संस्कृति के भारत में आत्मसात करने को विनोद कुमार शुक्ल कटी नाक में फुल्ली की तरह देखते हैं –

"संस्कृति और भारतीयता के नाम पर
कटी नाक में फुल्ली एक पहचान की तरह थी
खबरों और भयावह संभावनाओं के बीच
मैं रोने लगा अमेरिका हाय ! हाय !!
मेरी पत्नी रोने लगी रूस हाय ! हाय !!"[15]

उत्तर–आधुनिकता मूल्यों पर प्रहार करती है। इसमें भावनाओं को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। विनय विश्वास ने तो समाज की उस लिजलिजी सभ्यता को नंगा कर दिया है जहाँ माता–पिता को इसलिए घर में रखे जाता है कि इनसे घर का काम होता रहेगा–

"आखिर मर गया बूढ़ा
वो बड़ा अच्छा था
आटा पिसवाता था
सफाई वाली से अच्छी तरह सफाई करवाता था
सादगी से रहता था
बच्चों को खाना सिखाता था
उसके रहते घर को ताला नहीं लगाना पड़ा कभी।"[16]

स्त्री सौंदर्य का यूज उपभोक्ताओं को पटाने और पाठक वर्ग को आकृष्ट तथा रिझाने के लिए किया जाता है। कवि रमण कुमार सिंह इस वैश्विक बाजारू साजिश को सामने लाते हुए लिखते हैं–

"ब्रह्मांड सुंदरी का ताज पहनकर
तुम बेचती रहो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पाद
घरों के बाजार में गुम कर देने और बाजार को
घर–घर में पसारने के लिए ही पहनाया गया है यह ताज
लेकिन मटका भर पानी के लिए व्याकुल तुम्हारी माँ बहनें
जब देखेंगी टी वी पर तुम्हें शीतल पेय का करते हुए प्रचार
तीक्ष्ण धूप में भी सिहर जाएगी उनकी देह
झनझना उठेगा उनका सर्वांग
बाजार के चतुर सुजानों के बीच
खूब बड़े–बड़े अनुबंधों के तहत
तुम बाँटती रहो अपनी प्रायोजित हँसी।"[17]

उत्तर–आधुनिकता की विशेषता है विकेन्द्रीयता। इसमें केन्द्र में स्थित लोग विस्थापित हो जाते हैं और परिधि के लोग उस स्थान की ओर अग्रसर होते हैं। नारी, दलित, समलैंगिक आदि के आंदोलन इसी से प्रभावित बताये गए हैं। स्त्री अस्मिता, स्त्री विमर्श या स्त्री सशक्तीकरण उत्तर–आधुनिकता का

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

आन्दोलन है। समकालीन कवि मामराज शर्मा 'डूब गई पृथ्वी' कविता में स्त्री वेदना को बड़ी संवेदनशील भाषा में चित्रित करते हैं–

"ओट में खड़ी पृथ्वी/काँप गई अंदर तक
उसे लगा/वह उजड़ने वाली है
तभी अन्दर से/एक नन्हीं आवाज आई–
माँ मुझे बचा लो/मैं भी उगूँगी
रोपूँगी नवजीवन/मैं, जो लूँगी, जैसे भी
नहीं चाहिए मुझे/महंगे खिलौने
नहीं मागूँगी महंगे फ्राक/गजरे–गहने
न मनाना जन्म दिन मेरा।"[18]

इसी प्रकार दलित अस्मिता भी उत्तर आधुनिकता में उद्घाटित होती है। मनोज सोनकर वर्ण–व्यवस्था पर तीखा प्रहार करते हैं, जिससे सवर्ण कुप्रथाओं और कुण्ठित मान्यताओं पर फिर से निरीक्षण करने को बाध्य हो जाते हैं–

"मुँह से, जन्म से ब्राह्मण !
भुजा से क्षत्रिय !
जाँघ से वैश्य !
और पैर से शूद्र !
पैर कट गया
तो खड़े कैसे रहोगे?
लंगड़े हो जाओगे।"[19]

उत्तर–आधुनिकता मशीनीकरण के संघर्ष से जन्मी चेतना है जो प्रकृति और परम्परा को आत्मसात् करती है पर उसका व्यवसाय करने के उद्देश्यों से। उत्तर–आधुनिकता नगरीकरण की झुकाव रखती है। समकालीन कवि के लिए गाँव उसका स्थायी निवास है गाँव की सोंधी मिट्टी की खुशबू, वहाँ के संस्कारों तथा यादों को वह छोड़ना नहीं चाहता।

नरेन्द्र पुंडरीक की निम्न काव्य पंक्तियाँ हृदय को छू लेती हैं –

"घर बन रहा है
घर के नक्शे में माँ नहीं थीं
नहीं थे कहीं घर के नक्शे में पिता
घर के नक्शे से गायब हो रहा था
माता–पिता का घर
नक्शे में एक पूजा का कमरा है
माना जा रहा है कि
इसी में दिनभर रह लेंगी माँ
और बाहर बरामदे में जो रात में खाली रहेगा
उसमें ही सो लेंगे पिता।"[20]

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 1, March 2024

राजनीति एक प्रोफेशन बनकर रह गयी है। विधायक और सांसद निधि तथा करोड़ों रुपए का इनका खर्च देश की गरीबी और भुखमरी का कारण है। जनता का प्रतिनिधि जनता के बीच से निकलकर वैभव और सुख में लिप्त है। कवि ओमप्रकाश निर्मल लिखते हैं –

"राजनीति देह व्यापार हो गयी है
संसद की सीढ़ी याने
हर की पौढ़ी याने
राजनीतिक पंडों का
हरिद्वार हो गयी है।"[21]

उत्तर–आधुनिकता गरीबों के शोषण का एक उपक्रम है। ये विचार भले ही मार्क्सवाद से निकला हो, पर है उसका विरोधी। यह विचार साम्राज्यवाद–पूंजीवाद के लिए ठीक बैठता है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए यह लाभदायक है। कह सकते हैं उत्तर–आधुनिकता हमारे देश की गरीबी व शोषण से ध्यान हटाकर यथास्थितिवाद के पोषण का साम्राज्यवादी षडयंत्र है। उत्तर–आधुनिकता किसी भी प्रकार की स्वायत्तता को नहीं मानती, वह किसी अस्मिता या विवेक को नहीं स्वीकारती। ऐसे में स्त्री आंदोलन, जो 'स्त्री अस्मिता' और 'स्त्री अभिज्ञान' से उपजे हैं, नकार दिये जाएंगे। क्योंकि श्अस्मिताश, श्अभिज्ञानश की संभावना उत्तर–आधुनिकता में नहीं हो सकती।

भारत में उत्तर–आधुनिकता के कारण जाति तत्त्व तेजी से उभर कर सामने आ रहा है क्योंकि यह अस्मिता को बढ़ावा देती है। उत्तर–आधुनिकता यहाँ की संस्कृति दूषित कर रही है। ईश्वर, दर्शन, धर्म, कला और साहित्य भारतीय समाज की पहचान है जो इस विचारधारा के चलते घूमिल हो रहे हैं। आधुनिकता ने समानता, बंधुत्व और स्वतंत्रता का उद्घोष किया था, उत्तर–आधुनिकता इसे नकारती है।

कह सकते हैं कि बाजार वस्तुओं के ही मूल्य निर्धारित नहीं कर रहा बल्कि वह नैतिक मूल्यों को भी तय कर रहा है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब अर्थ की शक्ति द्वारा ही हम प्रेम, दया, करुणा और संबंधों का भी मूल्यांकन करने पर विवश होंगे। भूमण्डलीकरण और बाजारवाद के कारण समाज की सोच में तेजी से परिवर्तन आएंगे। पुराने मानक तथा मूल्य ध्वस्त होंगे। नये मूल्य निर्मित ही नहीं होंगे।

इस प्रकार उत्तर–आधुनिकता राजनीति के साथ–साथ समाज में एक जोखिम पैदा करने वाला प्रत्यय साबित होने वाली है। निष्कर्ष रूप में निर्मला गर्ग की पंक्तियां ही इस विषय का सार है–

"अब जब कि
दुनिया एक गाँव बनने जा रही है
और एक विश्व बाजार है जिसमें
हम सबा बिला जाएँगे
कितना जोखिम भरा शब्द हो गया है भरोसा
और उससे भी बड़ा जोखिम है उसे बचाना।"[22]

संदर्भ संकेत

1. अर्नाल्ड टायनबी – उद्धृत लक्ष्मी गौतम, उत्तर आधुनिकता और समकालीन साहित्य (2013), लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 12

2. गोपीचंद नारंग – संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र, साहित्य अकादमी (2000), नई दिल्ली, पृष्ठ 392
3. 3. डॉ. तारकनाथ बाली – पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास (2020), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 294
4. कृष्णदत्त पालीवाल – उत्तर आधुनिकतावाद और दलित साहित्य (2008), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 36
5. सुधीश पचौरी – उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श (2006), वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 22
6. वही, पृष्ठ 96
7. वही, पृष्ठ 21
8. मैनेजर पांडेय – संकट तो है लेकिन, (सं.) मुक्ता, उत्तर–आधुनिकता रू उत्तर संवाद (2006), नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 55
9. हेमंत कुकरेती, चाँद पर नाव, वाणी प्रकाशन दिल्ली।
10. ज्ञानेंद्रपति – आजादी उर्फ गुलामी, संशयात्मा (पहला संस्करण 2004), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 58
11. शैलेन्द्र – मैं हूं तुम्हारी कविता, पृष्ठ 68
12. विमल कुमार – बाजार–3, यह मुखौटा किसका है (2003), परिकल्पना प्रकाशन, निशातगंज, लखनऊ।
13. जयप्रकाश लीलवान – समय की आदमखोर धुन (2009), अनामिका पब्लिशर एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली, पृष्ठ 32
14. अष्टभुजा शुक्ल – दुरू स्वप्न भी आते हैं (2004), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 77–78
15. विनोद कुमार शुक्ल – कविता से लंबी कविता (2016), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 115
16. विनय विश्वास – बुड्ढा, पत्थरों का क्या है (2004), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 39
17. रमन कुमार सिंह – बधाई मिस यूनिवर्स, बाघ दूहने का कौशल (2022), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 104
18. मामराज शर्मा– डूब गई पृथ्वी, विपाशा, नवंबर दिसंबर 2003, पृष्ठ 65
19. मनोज सोनकर – शोषितनामा (1983), शुभदा प्रकाशन, दिल्ली।
20. नरेंद्र पुंडरीक – घर के नक्शे में, कथादेश, अप्रैल 2005, पृष्ठ 68
21. ओमप्रकाश निर्मल – भूमंडलीकरण और समकालीन हिंदी कविता (2014) सं. डॉ श्याम बाबू शर्मा, विकास प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ 97
22. निर्मला गर्ग – सफर के लिए रसद(2007), मेधा बुक्स, दिल्ली, पृष्ठ 60

1.प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर राजस्थान, मोबाइल 9413708988

ISSN: 2347-2979

2.ऐसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, मोबाइल 9461550103,
मेल drgrsharma76@gmail.com